Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P. G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Role of Reason in Religion

(Part - II)

हे प्रभु तू आस्था को तर्कबुद्धि के द्वारा स्पष्ट करता है—

मुझे भी समझ दे ---- कि मैं तेरे अस्तित्व को स्पष्ट करूँ ---- क्योंकि जैसा हमारा विश्वास है तू वैसा ही है, जैसा हमारा विश्वास है।

सत्तामूलक प्रमाण प्रस्तुत करने पर अंसेलम ने कहा—

हे सत्प्रभु! तुझे कोटिशः धन्यवाद है, क्योंकि अब मैं तेरे ज्योति के द्वारा उस बात को समझता हूँ जिसे मैंने तेरे अनुग्रह से प्राप्त किया था।

स्पष्ट है कि अंसेलम आस्था को तर्कबुद्धि से प्राथमिक स्थान प्रदान करते थे लेकिन यहाँ उल्लेखनीय है कि वे तर्कबुद्धि अथवा समझ की कीमत भी

बहुमूल्य मानते थे यही कारण है कि इन्होंने यह स्वीकार किया कि तर्कबुद्धि की महत्ता है, लेकिन तर्कबुद्धि आस्था से परे अथवा स्वतन्त्र नहीं है।

(ii) धर्म में तर्कबुद्धि का स्थान एवं उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है—

विचार का एक अन्य पक्ष भी है, जो धर्म में तर्कबुद्धि का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान निरूपित करता है। यह ठीक है कि धर्मों में आस्था प्रमुख है, लेकिन उल्लेखनीय है कि आस्था के नींव पर आधारित धर्म की विशाल भावनात्मक इमारत को दृढ़ता एवं स्थायित्व प्रदान करने में तर्कबुद्धि महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत हुआ है। तर्क की महत्ता को निम्न तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया जाता है—

(i) धर्म की यह स्वरूपगत माँग है कि वह सर्वव्यापक हो तथा सर्वव्यापक होने के लिए उसे किसी सर्वव्यापक आधार पर प्रतिष्ठित होना चाहिए। अब मानव में तर्कबुद्धि की एक ऐसी शक्ति है जो सभी व्यक्तियों में पायी जाती है इसलिए धर्म को अपने सर्वव्यापक रूप को प्राप्त करने के लिए उसे तर्कबुद्धि पर प्रतिष्ठित होना होगा। अतः धर्म के लिए तर्कबुद्धि अपरिहार्य है।

(ii) फिर, धर्म में धर्म सम्बन्धी सत्यता को दृढ़तापूर्वक स्थापित करने का एकमात्र आधार तर्कबुद्धि है। यह सम्भव है कि धार्मिक पहुँच के लिए तर्कबुद्धि से परे अन्य मानव शक्ति के बीच कार्यप्रणाली देखी है, जाय, लेकिन इन शक्तियों में विश्वसनीयता तथा उपादेयता अन्त में तर्कबुद्धि द्वारा ही निर्धारित होती है।

(iii) पुनः यह ठीक है कि धर्म आस्था का विषय है जिसमें "भाव" को विशेष रूप में पाया जाता है लेकिन यहाँ उल्लेखनीय है कि यह भाव क्षणभंगुर तथा आत्मनिष्ठ स्वरूप का होता है। ऐसी स्थिति में भाव पर आधारित धार्मिक अनुभूति बहुत जल्द ही खत्म हो जाती है अतः किसी भी अनुभूति को स्थायी बनाने के लिए उसे प्रत्ययों (concepts, idea) में बदलना पड़ता है प्रत्ययों की रचना तर्कबुद्धि के आधार पर की जाती है अतः भाव प्रधान रहने पर भी धार्मिक अनुभूति को स्थायी रखने के लिए स्वयं भक्त को ही तर्कबुद्धि की आवश्यकता पड़ती है।

— To be continued —